ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 103

सहयोग शुल्क : रु. 1 / ओगष्ट : 2025

# दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई



सपनों को सच करने के सामर्थ्य का नाम मानसी जोशी है ।

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

मानसी जोशी केवल खिलाडी नहीं बल्कि प्रेरणा का पर्याय है।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

# निरामय हेल्थ पॉलिसी

## पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

## लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

## आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

### सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

# संपादकीय

अपनी सफलता और लोकप्रियता के कारण दिव्यांग मानसी जोशी समय के साथ कई युवा लड़कियों के लिए एक आदर्श बन गई हैं, जो भारत में उनके जैसा बनने का सपना देखती हैं। “ बड़े होते हुए, मेरे पास अद्भुत आदर्श थे जिन्होंने जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को आकार दिया और मुझे हमेशा अपने विचारों और विश्वासों के बारे में खुलकर बोलने के लिए प्रेरित किया। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाना गया जिसने रूढ़िवादिता को तोड़ा है। मैंने हमेशा खुद की सुनने, लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने में विश्वास किया है। मैंने अपनी विकलांगता को कभी भी किसी भी काम को करने से नहीं रोका।”

मानसी जोशी के शब्द किसी भी हतोत्साहित व्यक्ति के जीवन में उर्जा भरकर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। अपने जीवन में एक दुर्घटना के कारण आई जीवन भर की विकलांगता को मानसी जोशी ने कभी अपने जीवन में बाधा नहीं माना और ना ही उसे देखकर कभी हार मानी। जीवन को आगे बढ़ाने के लिए उसने एक खेल को चुना और उस खेल ने मालती के पूरे जीवन को बदल दिया। मालती जोशी आज पूरे विश्व के दिव्यांगो के लिए प्रेरणा का सब से बड़ा स्रोत बन गई है। उसी के शब्दो में कहें तो-

“ ऐसे कई मौके आएंगे जब आप हार मानने का मन करेंगे, लेकिन फिर अपने आस-पास समर्थन प्रणाली ढूंढें और लोगों को अपने लक्ष्य बताएं, जब आपको लगे कि आप हतोत्साहित महसूस कर रहे हैं तो लोगों को आपको आगे बढ़ाने दें। एक विकलांग व्यक्ति के रूप में खेल खेलना निश्चित रूप से जीवन बदल सकता है। मैं चाहती हूँ कि हर विकलांग व्यक्ति को खेल का लाभ मिले, जैसा कि इसने मुझे दिया है।” टाइम मैगजीन के कवर पेज पर चमकना दुनिया में हर किसी के लिए एवरेस्ट की ऊंचाईयों को छूने से कम नहीं हैं। मानसी ने इस मुकाम को हासिल किया है। मानसी को अपने जीवन की हर सफलता के लिए अभिनंदन और शुभकामनाएँ।


दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

ओगष्ट : 2025, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 103

**प्रेरणास्त्रोत और संपादक**

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी।

**सह-संपादक**

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

**संपर्क-सूत्र**

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

**मुद्रक**

**प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.**

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

# कड़ी मेहनत, महत्वाकांक्षा और द्रढ़ता का पर्याय मानसी जोशी दुनिया भर की प्रेरणा स्रोत

**"किसी की भी बात मत सुनो जो कहता है कि तुम कुछ नहीं कर सकतीं ।**
**तुम्हें सपने देखने होंगे और उन्हें पूरा करने में पूरी ताकत लगानी होगी, क्योंकि सपने सच होते हैं । "**

मानसी जोशी (जन्म 11 जून 1989) एक भारतीय पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी हैं । वह पैरा बैडमिंटन महिला एकल SL3 वर्ग में पूर्व विश्व चैंपियन हैं । 8 मार्च 2022 को, उन्हें महिला एकल SL3 वर्ग में विश्व में नंबर 1 स्थान दिया गया।

## प्रारंभिक जीवन और पृष्ठभूमि

मानसी का जन्म राजकोट , गुजरात में हुआ था और उनका पालन-पोषण अणुशक्तिनगर, मुंबई में हुआ । उन्होंने 2010 में मुंबई विश्वविद्यालय केकेजे सोमैया कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि प्राप्त की । खेल प्रेमी, मानसी ने अपने स्कूल और कॉलेज जीवन में फुटबॉल और बैडमिंटन खेला । जोशी ने छह साल की उम्र में अपने पिता, जो भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक हैं, के साथ बैडमिंटन खेलना शुरू किया था । इन वर्षों में, उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपने स्कूल, कॉलेज और कॉर्पोरेट का प्रतिनिधित्व किया । 2010 में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने दिसंबर 2011 तक एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम किया ।

## दुर्घटना और संघर्ष

दिसंबर 2011 में, काम पर जाते समय मोटरसाइकिल चलाते समय उनकी सड़क दुर्घटना हो गई और उनका पैर

काटना पड़ा। 45 दिनों के अस्पताल में भर्ती रहने के बाद, मानसी को एमजीएम अस्पताल वाशी, नवी मुंबई से छुट्टी मिल गई। हाल ही में विश्वविद्यालय से स्नातक मानसी जोशी का भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा था, जब वह दिसंबर 2011 की सुबह अपनी नई नौकरी के लिए दैनिक यात्रा पर निकलीं।यात्रा के दस मिनट बाद ही सब कुछ बदल गया जब उनकी मोटरसाइकिल गलत दिशा में आ रहे एक ट्रक से टकरा गई। एम्बुलेंस के देर से आने, अस्पतालों में सुविधाओं की कमी और कुछ सर्जनों के न होने के कारण, जोशी को कुशल चिकित्सा सहायता मिलने में लगभग नौ घंटे लग गए।

अस्पताल में लेटी हुई, सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में उसका उभरता हुआ करियर - और संभवत: उसका भविष्य - छीन लिया गया, 22 वर्षीय जोशी जानना चाहती थी कि अब उसे अपने जीवन में किन सीमाओं का सामना करना पड़ेगा। लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि वहां कोई नहीं था। जोशी याद करते हुए कहते हैं, "जब मैं अस्पताल के बिस्तर पर थी, तो मैंने अपने डॉक्टर से पूछा, 'क्या मैं अंग-विच्छेदन के बाद बैडमिंटन खेल सकती हूँ? ' और डॉक्टर ने कहा, 'अगर तुम चाहो तो माउंट एवरेस्ट पर चढ़ सकती हो। तुम कुछ भी कर सकती हो।'" हालांकि जोशी ने अभी तक एवरेस्ट पर चढ़ाई नहीं की है, लेकिन जीवन बदल देने वाली दुर्घटना और अंग-विच्छेदन के बाद से उनका रवैया बिल्कुल वैसा ही है जैसा डॉक्टर ने बताया था। आगामी वर्षों में, उन्होंने पैरा बैडमिंटन में विश्व चैंपियन बनने और विकलांग लोगों की हिमायती बनने के लिए प्रयास किए, तथा व्यक्तिगत उदाहरण से यह साबित किया कि कोई भी चीज उनकी प्रगति में बाधा नहीं बन सकती।

## पटरी पर वापस

दुर्घटना के बाद अस्पताल में बिताए 45 दिनों में जोशी की छह सर्जरी हुईं । जब डॉक्टरों को एहसास हुआ कि अब वे उनके बाएँ पैर को नहीं बचा सकते, तो उनके घुटने के ऊपर का एक पैर काटना पड़ा । बचपन से ही विभिन्न खेलों में सक्रिय रहीं जोशी को बैडमिंटन सबसे ज़्यादा पसंद था और उन्होंने अपने पुनर्वास के दौरान फिर से बैडमिंटन खेलना शुरू किया । इन प्रशिक्षण सत्रों के दौरान, वह कृत्रिम अंग के साथ चलने में सहज हो गईं । जोशी ने कहा, "उस समय मैं सिर्फ़ खड़े होकर ही स्ट्रोक्स करती थी, लेकिन इससे मुझे काफ़ी आत्मविश्वास मिला, ख़ासकर चलने में ।" उन्होंने आगे कहा, "मेरे लिए यह पूरी यात्रा खेल से ही शुरू हुई है । जब मैंने अपनी पुनर्वास प्रक्रिया शुरू की, तो खेल ने मुझे इसे तेज़ करने में मदद की । जब ज़िंदगी ने मुझे एक नई दिशा दी, तो खेल उसमें एक अहम हिस्सा रहा ।" शारीरिक लाभ से अधिक जोशी ने महसूस किया कि पैरा बैडमिंटन का कोर्ट के बाहर उनके आत्मविश्वास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है ।

जोशी ने कहा, "अपने खेल करियर की शुरुआत में, मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक अच्छी नौकरी छोड़कर, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में काम करना, जिसके बारे में लोगों को लगता था कि मेरा कोई भविष्य या करियर नहीं है, बहुत मुश्किल था । उन्हें यह विश्वास दिलाना कि हाँ, मैं यही करना चाहती हूँ ।" "सौभाग्य से, मुझे अपने माता-पिता का भरपूर समर्थन मिला। मेरे माता-पिता कहते हैं, 'तुम जो चाहो करो । हम जानते हैं कि किसी भी करियर में आप अवसर विकसित कर सकती हो और कमाई कर सकती हो ।'"

इस समर्थन को पूरे देश में गूंजने में ज़्यादा समय नहीं लगा । अगले कुछ वर्षों में जोशी भारत की राष्ट्रीय टीम में शामिल हो गईं और अगस्त 2019 में स्विट्ज़रलैंड के बासेल में पैरा बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप में हिस्सा लिया, जहाँ उन्होंने महिलाओं की SL3 श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता ।

इस सफलता के बाद, वह भारत में एक जानी-मानी हस्ती बन गईं । लोग उन्हें संदेश भेजने लगे, राहगीर उनके साथ तस्वीरें खिंचवाने के लिए कहने लगे और टाइम मैगज़ीन ने उन्हें अपनी 'अगली पीढ़ी के नेताओं' की सूची में शामिल कर लिया । अपनी इस अपार प्रसिद्धि को और बढ़ाने के लिए, जोशी ने 2020 में उनके

सम्मान में एक विशेष बार्बी डॉल भी जारी की।

- **रूढ़िवादिता को तोड़ता हुआ प्रेरणादायी जीवन**

अपनी सफलता और लोकप्रियता के कारण, जोशी समय के साथ कई युवा लड़कियों के लिए एक आदर्श बन गई हैं, जो भारत में उनके जैसा बनने का सपना देखती हैं। " बड़े होते हुए, मेरे पास अद्भुत आदर्श थे जिन्होंने जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को आकार दिया और मुझे हमेशा अपने विचारों और विश्वासों के बारे में खुलकर बोलने के लिए प्रेरित किया। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाना गया जिसने रूढ़िवादिता को तोड़ा है। मैंने हमेशा खुद की सुनने, लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने में विश्वास किया है। मैंने अपनी विकलांगता को कभी भी किसी भी काम को करने से नहीं रोका," जोशी ने पुष्टि की।

अब देश और दुनिया भर के लोगों के लिए एक आदर्श बन चुकी जोशी अपनी कहानी दूसरों के साथ साझा करने के लिए उत्सुक हैं, ताकि वे बड़ी बाधाओं पर विजय पाने के लिए प्रेरित हो सकें। उन्होंने कहा, **"मुझे लगता है कि विकलांग लोगों के रूप में, हम समान समस्याओं का सामना करते हैं और अवसरों तक पहुँच लोगों के लिए एक बड़ा बदलाव ला सकती है।" "कहानियाँ साझा करना, यह सबसे बड़े साधनों में से एक है। हम अगली पीढ़ी को यह बताकर प्रेरित कर सकते हैं कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग लोगों के लिए दुनिया कैसे काम करती है।"**

अपने करियर की शुरुआत में जोशी के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रशिक्षण और सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम करने के बीच संतुलन बनाना था। उस दौरान भी पूर्णकालिक काम करते हुए नियमित रुप से सुबह ४ बजे उठकर ४-३० से लेकर ८-०० बजे तक प्रशिक्षण लेती थी और फिर कार्यालय जाती थी। उनके प्रशिक्षण में शाम के तीन सत्र भी शामिल थे। अपनी चुनौतियों से जूझ रहे लोगों के लिए उनकी सलाह है कि वे आगे बढ़ते रहें। जोशी ने कहा, **"ऐसे कई मौके आएंगे जब आप हार मानने का मन**

करेंगे, लेकिन फिर अपने आस-पास समर्थन प्रणाली ढूंढें और लोगों को अपने लक्ष्य बताएं, जब आपको लगे कि आप हतोत्साहित महसूस कर रहे हैं तो लोगों को आपको आगे बढ़ाने दें ।" "एक विकलांग व्यक्ति के रूप में खेल खेलना निश्चित रूप से जीवन बदल सकता है । मैं चाहती हूँ कि हर विकलांग व्यक्ति को खेल का लाभ मिले, जैसा कि इसने मुझे दिया है।"

टाइम पत्रिका ने जोशी को अगली पीढ़ी के नेता के रूप में चित्रित किया, जो किसी पैरा एथलीट के लिए पहली बार हुआ, तथा यह 31 वर्षीय खिलाड़ी के लिए एक और बड़ी उपलब्धि है । इस अवसर पर वह कहती है कि- **"मुझे खुशी है कि मुझे अपने खेल की बदौलत अपनी आवाज़ मिली । मैं भाग्यशाली रही हूँ कि इस आवाज़ का इस्तेमाल प्रोस्थेटिक्स, सड़क सुरक्षा, विकलांगता और समावेशिता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कर पाई । मेरे लिए, टाइम 2020 नेक्स्ट जेनरेशन लीडर्स का हिस्सा बनना और टाइम एशिया के कवर पर जगह बनाना बेहद सम्मान की बात है । मैं व्यक्तिगत रूप से सोचती हूं कि टाइम पत्रिका के कवर पर एक विकलांग खिलाड़ी को देखने से भारत और एशिया में विकलांगता और पैरा खेलों के बारे में बहुत सारी धारणाएं बदल जाएंगी।"**

11 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर इस स्टार शटलर को अपनी जैसी दिखने वाली एक अनोखी बार्बी डॉल उपहार में दी गई । इस उपलब्धि के बारे में प्रसन्नचित्त जोशी ने कहा कि, **" विकलांग**

**समुदाय का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है, जिसका प्रतिनिधित्व भारत में बहुत कम है।"** उपलब्धियों के साथ जिम्मेदारियां भी आती हैं और जोशी ने माना कि उन्हें इसे सावधानी से संभालना होगा तथा अपने समय और ऊर्जा का उपयोग स्वयं और समाज की बेहतरी के लिए करना होगा।

"मुझे उम्मीद है कि मैं अपनी उपलब्धियों से आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करती रहूँगी। मुझे लगता है कि मैं अपना खेल खेलती रहूँगी और विभिन्न मंचों पर समावेशिता और विविधता के महत्व के बारे में बोलती रहूँगी।"

जोशी ने कहा, "भारत में विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के पैरोकार के रूप में इस सूची में शामिल होने वाला पहला पैरा एथलीट होना एक बड़ी उपलब्धि है। मुझे अपने खेल और इससे मुझे मिली आवाज़ के ज़रिए भारत में पैरालंपिक आंदोलन में योगदान देने में खुशी हो रही है।"

अपनी जैसी दिखने वाली बार्बी डॉल के साथ, वह ऑस्ट्रेलियाई पैरालंपिक पदक विजेता मैडिसन डी रोजारियो और तुर्की पैरा तैराकी चैंपियन सुमेये बोयासी सहित कई अन्य लोगों की तरह उन असाधारण महिलाओं के सम्मान में शामिल हो गई हैं, जो दुनिया भर की लड़कियों को उनके सपनों के अनुसार कुछ भी बनने के लिए प्रेरित करती हैं।

" यह अविश्वसनीय है कि एक अनोखी (OOAK) बार्बी डॉल को मेरे जैसा बनाया गया है।

मुझे रोल मॉडल्स की इस श्रेणी में शामिल होने और मैडिसन डी रोज़ारियो, सुमेये बोयासी और अन्य सशक्त बार्बी शीरोज़ के साथ जुड़ने पर गर्व है, जिन्होंने युवा लड़कियों को यह विश्वास दिलाया है कि वे जो चाहें बन सकती हैं!

"मैं सचमुच मानती हूं कि समावेशिता और विविधता के बारे में शिक्षा जल्दी शुरू होनी चाहिए और मुझे उम्मीद है कि मेरी कहानी कई और लोगों को प्रेरित करेगी, युवा लड़कियों को अपनी असली क्षमता का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करेगी ताकि वे कड़ी मेहनत कर सकें और वह बन सकें जो वे बनना चाहती हैं।"

## • 'मानसी जैसे रोल मॉडल की जरूरत'

भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) की अध्यक्ष दीपा मलिक पैरा शटलर की नवीनतम मान्यता पर प्रसन्न हैं और उन्होंने कहा कि इससे भारतीय पैरालंपिक आंदोलन को काफी बढ़ावा मिलेगा। हमें मानसी जैसे रोल मॉडल की जरूरत है जो भारत में पैरा एथलीटों की अगली पीढ़ी और नई प्रतिभाओं को प्रेरित करें, वास्तव में न केवल पैरा एथलीटों को, विशेषकर भारत की महिलाओं और युवा लड़कियों को, जो उनकी कहानी, उनकी सफलता, उनके दृढ़ संकल्प, उनके धैर्य और उनके कभी हार न मानने वाले रवैये से खुद को जोड़ सकें। "यह भारत में पैरा खेलों की सफलता और मुख्यधारा के रूप में उनकी पहचान का जश्न मनाने जैसा है। भारत में पैरालिंपिक एक नई चीज़ है। अब एथलीटों को उनका हक़ मिल रहा है; उन्हें वो सम्मान मिल रहा है जिसके वे हक़दार हैं और उनके पदकों का जश्न मनाया जा रहा है। मैं उनके लिए बहुत खुश हूँ और उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ," मलिक ने कहा। उन्होंने ज़ोर

देकर कहा कि नव-स्थापित पीसीआई यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है कि "देश में पैरा खेलों का एथलीट-केंद्रित विकास हो और इसके एथलीटों का सम्मान हो।"

**मानसी जोशी कड़ी मेहनत पर जोर देते हुए कहती हैं कि सफल होने के लिए कड़ी मेहनत, महत्वाकांक्षा और दृढ़ता सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं। "युवा लड़कियों के लिए मेरा संदेश यही होगा कि 'किसी की भी बात मत सुनो जो कहता है कि तुम कुछ नहीं कर सकतीं। तुम्हें सपने देखने होंगे और उन्हें पूरा करने में पूरी ताकत लगानी होगी, क्योंकि सपने सच होते हैं।'"**

## पुरस्कार और मान्यता

मानसी को अक्टूबर 2020 में टाइम मैगज़ीन

वोइस टू दिव्यांग

द्वारा नेक्स्ट जनरेशन लीडर 2020 के रूप में सूचीबद्ध किया गया था और वह उनके एशिया कवर पर दिखाई दीं, जिससे वह विकलांग लोगों के अधिकारों की पैरोकार होने के कारण दुनिया की पहली पैरा-एथलीट और मैगज़ीन के कवर पर प्रदर्शित होने वाली पहली भारतीय एथलीट बन गईं।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस (11 अक्टूबर 2020) के अवसर पर, बार्बी ने युवा लड़कियों को प्रेरित करने के लिए मानसी और उसकी उपलब्धियों का जश्न उसकी तरह की एक अनोखी बार्बी गुड़िया बनाकर मनाया। उन्हें बीबीसी द्वारा 2020 में दुनिया भर की 100 सबसे प्रेरणादायक और शक्तिशाली महिलाओं में से एक के रूप में भी मान्यता दी गई है और उन्हें पीवी सिंधु, मैरी कॉम, विनेश फोगट और दुती चंद के साथ 2020 के बीबीसी इंडियन स्पोर्ट्सवुमेन ऑफ द ईयर अवार्ड के लिए नामांकित किया गया था।

- 2017 - महाराष्ट्र राज्य एकलव्य खेल क्रीड़ा पुरस्कार (सर्वोच्च राज्य सम्मान)
- 2019 - सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ी (महिला) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार
- 2019 - ईएसपीएन
- इंडिया अवार्ड्स में दिव्यांग एथलीट ऑफ द ईयर का पुरस्कार
- 2019 - वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पैरा-एथलीट के लिए टाइम्स ऑफ इंडिया स्पोर्ट्स अवार्ड
- 2019 - एसेस 2020 स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर (पैरा-स्पोर्ट्स) हिंदू समाचार पत्र (नामांकित)
- 2019 – बीबीसी इंडियन स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर
- 2020 – टाइम नेक्स्ट जेनरेशन लीडर
- 2020 - बीबीसी 100 महिलाएं
- 2020 – फोर्ब्स इंडिया, 2020 की स्व-निर्मित महिलाएं

★★★

# डिसेबिलिटी अवेरनेस केम्प और आर्ट एण्ड क्राफ्ट वर्कशोप

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO) द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के लिए DISABILITY AWERNESS CAMP AND POTTERY ART AND CRAFT WORKSHOP का आयोजन दिनांक 18 July 2025 कि दिन पालडी स्थित अन्नपूर्णा होल में किया गया था। इस कार्यक्रम में ७० से भी अधिक मनोदिव्यांग बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया था। दीप प्राकट्य से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया था। समाज में और देश में दिव्यांगता के बारे में लोगों में जागृकता कैसे लाई जा सकती है इस बारे में संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा जानकारी प्रदान की गई थी। कार्यक्रम में मौखिक प्रश्न तथा पेनल चर्चा रखी गई थी। कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों को संस्था की ओर से POT दिया गया था जिसे बच्चों ने अच्छी तरह से सुशोभित किया गया था। कार्यक्रम में मनोदिव्यांग बच्चों के लिए नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम में मनोदिव्यांग बच्चों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया था।

Date : 18/7/2025, Friday
Organized by:

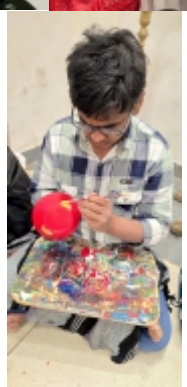

Trust (NGO)

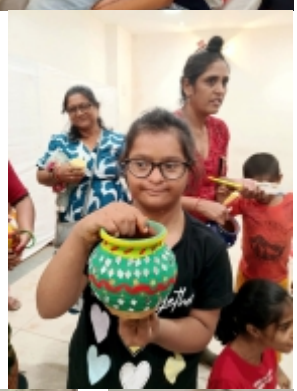

# मनोदिव्यांग बच्चों ने देखी 'सितारे जमीन पर' फिल्म

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबवल्ड की भूतपूर्व छात्रा जो डाउन सिन्ड्रोम से पीडित थी उसने नवजीवन संस्थान के 80 मनोदिवयांग बच्चों के लिए राजहंस थियेटर में सितारे जमीन पर फिल्म के शो का आयोजन किया था। बच्चों के लिए केवल फिल्म देखने का ही नहीं बल्कि लंच का भी आयोजन किया गया था। जैसे कि सब जानते है कि आमिर खान की इस फिल्म में मनोदिव्यांग बच्चों ने स्वयं अभिनय किया है । मनोदिव्यांग बच्चों की समस्याओ को उजागर करने के लिए ऐसी समस्याओं से पीडित बच्चों को ही फिल्म में लिया गया था । बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए अहमदाबाद जिला समाज सुरक्षा अधिकारी श्री सुनिलभाई राठोड तथा अन्य अधिकारी जितनल बहन ने भी बच्चों के साथ ही इस फिल्म को देखकर उन्हें प्रोत्साहित किया था।

# Karma Associates

TATA AIA LIFE INSURANCE

TATA AIG INSURANCE

"All insurance in one umbrella."

Book your Appointment:

Bhavin Shah - 99255 94767 | Priti Vora - 99241 99190

karmaassociatesbhavinshah@gmail.com

# Kalash Associates

- Car Loan
- Home Loan
- Business Loan
- Personal Loan
- Mortgage Loan
- Education Loan

Book your Appointment:

Jinal Joshi - 7575816434

kalashassociates87@gmail.com

Golden opportunity to join our business... 99255 94767

# ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

# ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

## मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर